सत्संग परम संत हुजूर
पुष्कर दयाल जी महाराज
(फरीदाबाद– 25 सितम्बर 2016)

आप जितना प्रेम बाँटोगे, उतना ही प्रेम बढता जाएगा। यानि आप एक हिस्सा प्रेम बाँटोगे तो 10 हिस्सा बढ़ जाएँगें। इतनी है प्रेम में ताकत। Love is God & God is love, मालिक का रूप क्या है? मालिक का रूप प्रेम है। मालिक हमारे अंदर प्रेम के रूप में है। गुरू बार–2 कहता है मुझसे प्रेम करो।

सब करनी मैं आप कराऊँ, पहुँचा दूं धुर दरबारा।
तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।।

हर सत्संग में गुरू यही कहता है मुझसे प्रेम करो। क्यों कहता है गुरू मुझसे प्रेम करो? गुरू इसलिए कहता है, गुरू का रूप क्या है? गुरू का रूप वही है जो मालिक का रूप है। जब तुम गुरू से प्रेम करते हो तो मालिक से प्रेम करते हो। और मालिक क्या है? मालिक प्रेम है। प्रेम से प्रेम मिल गया, प्रेम ही बन गया, और प्रेम की नौका में बैठकर भवसागर से पार हो जाओ।

कल्पना करो इस संसार में हरेक मनुष्य प्रेम करता है। फिर क्या होगा? ना पुलिस की जरूरत पडेगी, ना मिलिट्री की जरूरत पड़ेगी। ना किसी कानून की जरूरत पड़ेगी, ना किसी जेल की जरूरत पड़ेगी। फिर ये सारा संसार स्वर्ग बन जाएगा। लेकिन ऐसा कभी भी नही होगा। क्यों? क्योंकि काल को भी तो अपना काम करना है। काल चाहता है कि इस संसार में कोई भी प्रेम नही करे। सब एक दूसरे से नफरत करें। और करते हैं, सब एक दूसरे से नफरत करते हैं। और नफरत क्या है? नफरत करने से हमारा कर्म बनता है। जब हम किसी से नफरत करते हैं तो हमारा कर्म बनता है। परम दयाल जी महाराज अपने सत्संग में नफरत की चार मिसाल देते थे। पहली मिसाल राम जी ने सरयू नदी में डूबकर आत्म हत्या क्यों की? क्योंकि क्षण भर के लिए राम के मन में सीता के लिए नफरत पैदा हो गई। जब सीता लंका से वापिस अयोध्या आ गई तो वहाँ के लोग आपस में सीता के बारे में बात करने लगे। तो क्षण भर के लिए राम के मन में भी शक हो गया था, शायद सीता अपवित्र है। और उसका कर्म बन गया। क्योंकि सीता पवित्र थी, इसलिए उस कर्म के प्रभाव से उसको आत्म हत्या करनी पड़ी। दूसरी मिसाल देते हैं क्यों महात्मा गाँधी अंत में गोली लगने से मरे। जबकि महात्मा गाँधी इतने बड़े संत थे, उन्होने देश को आजाद कराया। फिर अंत में वो क्यों गोली लगने से मरे? क्योंकि वो अंग्रेजों से नफरत करते थे। उनके मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा थी और वो उनका कर्म बन गया। और उस कर्म का उनको भुगतान करना पडा। तीसरी मिसाल वो ईसामसीह की देते हैं। क्राईस्ट को क्यों सूली पर चढाया गया? क्यों हाथों में पैरों में बडे–2 कील ठोके गए? क्योंकि वो रोम के साथ नफरत करते थे। और चोथी मिसाल वो अपने घर की देते थे। उनके तीन बच्चे थे दो लड़के और एक लड़की। उनका छोटा भाई रेलवे में स्टेशन मास्टर था। उसके दो बच्चे थे, पता नही क्यों उसने अपने दोनों बच्चें इनके ही घर में रहने के लिए भेज दिए। अब परम दयाल जी महाराज की आमदनी इतनी नही थी, बड़ी मुश्किल से गुजारा चलता था, ऊपर से दो बच्चे और आ गए। तो उनकी बीबी हमेशा कुढ़ती रहती थी। मैं अपने बच्चों को दूध नही पिला सकती हूँ, ऊपर से दो बच्चे और आ गए। अब बताओ मैं कैसे करूँ, क्या करूँ? तो उनके मन में उन दोनों बच्चों के प्रति नफरत पैदा हो गई। परमदयाल जी महाराज उसको हमेशा कहते थे, भाग्यवान तू इन बच्चों के साथ नफरत मत कर। इसका फल बहुत बुरा होगा। ये तेरा कर्म बन रहा है और इस कर्म का भुगतान तुझको करना पड़ेगा। और ऐसा ही हो गया, उसका अपना 17 साल का जबान बेटा मर गया। बाबा फकीर होशियारपुर में सत्संग दे रहे थे, तो कोई उनके कान में कुछ

कह कर गया, बाबा फकीर ने सत्संग चालू रखा। जब सतसंग खत्म हो गया, तब बाबा फकीर ने कहा ये जो बीच में नारायण दास आया था, मेरे कान में कह कर गया कि मेरा 17 साल का जवान बेटा मर गया है। और कहते हैं मेरा एक पाव खून बढ़ गया। उनका जबान बेटा मर गया, लेकिन उन्होनें सत्संग चालू रखा। अगर उनकी जगह हम होते तो अपनी छाती पीटते रहते, हाय! मेरा बेटा। लेकिन उन्होने ऐसा कुछ नही किया, सत्संग रोका नही, चालू रखा। यही है संत की पहचान, ना सुख में सुखी ना दुख में दुखी। उनका जवान बेटा मर गया, लेकिन उनको कोई दुख नही हुआ, क्यों नही दुख हुआ? क्योंकि उनके पास ज्ञान था। कि ये संसार सब झूठ है। यहाँ कोई किसी का नही है। सब लेन–देन के रिश्ते हैं। लेन–देन पूरा करते हैं और चले जाते हैं। लेन–देन पूरा हो गया, फिर तू कौन और मैं कौन? यहाँ कोई किसी का अपना नही है, ना बीबी, ना पति, ना माँ, ना बाप, ना भाई, ना बहन, ना बेटा। हमारी बीबी का जब अंत समय आया तो उससे पूछा आपके पति को बुलायें, उसने कहा नही। फिर उससे पूछा आपके बेटे को बुलायें, उसने कहा उसको मत बुलाओ। फिर किसको बुलायें? महाराज जी को बुलाओ।

भगवान कृष्ण गीता में अर्जुन को कहते हैं, अगर तुम अंत समय में मुझको याद करेगा, तो तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी। तो अर्जुन कहता है इसमें कौन सी बडी बात है, मैं आपको अंत समय में याद करूँगा। भगवान कृष्ण ने कहा ऐसा नही हो सकता। जो तुमने सारी उम्र किया है, वही अंत समय में तुम्हारे सामने आएगा। तुम कितनी भी कोशिश करोगे, मैं भगवान को याद करूँ, भगवान याद नही आएँगें। हाँ अगर तुमने सारी उम्र भगवान को याद किया है, तो फिर अंत समय में तुमको भगवान ही याद आएँगें। निश्चय ही तुमको भगवान याद आ जाएँगें। तो हमारी संतोष संत थी, उसने हमेशा संतों की सेवा की। और उनके ध्यान में हमेशा संत ही रहते थे। और अंत समय में उसको संत ही ध्यान में आ गए। इस संसार में हमारा एक ही रिश्तेदार है, वो है सतगुरू। वो हमारे साथ हमेशा रहता है, हमको कभी छोड़ता नही है। ये हमारी भूल है कि हम सोचते हैं भगवान हमको भूल गए हैं। लेकिन ऐसा नही है वो हमें कभी नही भूलता है। क्योंकि वो हमारे अंदर ही बैठा है। वो हमको कभी नही भूलता है, बाकी संसार के जितने भी रिश्तेदार हैं सब हमको भूल जाते हैं। एक बेटा जिसको माँ अपने गर्भ में 9 महीने रखती है। फिर उसको जन्म देती है। वही बेटा एक दिन उसको वृद्धाश्रम में डालकर आता है। तो कौन है हमारा रिश्तेदार संसार में।

सहारनपुर की बात है, एक सेठ था। उसका एक इकलोता बेटा था। उसका बेटा जन्म से ही बीमार रहता था। उसका बहुत इलाज करवाया। फिर किसी ने बताया, पास में एक गाँव है, वहाँ एक हकीम रहता है, उसके पास लेकर जाओ। तो सेठ अपने बेटे को उस हकीम के पास लेकर गया। हकीम ने उसकी नब्ज देखी, उसको दवाई दी और अपनी फीस 15 रू0 लेकर चला गया। जब हकीम चला गया, तो सेठ का बेटा बिस्तर से खडा हो गया और जोर–2 से हँसने लगा। सेठ घबरा गया, सेठ ने पूछा बेटा क्या हो गया? तो बेटा बोला कौन बेटा, कौन बाप? आज से मेरा और आपका लेन देन खत्म हो गया। मेरे 15 रू. बाकी रह गए थे। वो आज आपने हकीम को दे दिए। आपका हमारा हिसाब खत्म। उसी टाईम बेटे ने दम तोड़ दिया। तो ये हैं संसार के रिश्ते और इन्ही संसार के रिश्तों के लिए हम आँशु बहाते हैं। सतगुरू कहता है संसार के लिए तुम जितने भी आंसु बहाओ सब गटर में। सब Waste कोई फायदा नही। अगर तुम सतगुरू के लिए एक भी आंसु बहाओगे, तो सतगुरू आपके एक–2 आंसु का हिसाब देगा। लेकिन सतगुरू के लिए कोई आंसु नही बहा सकता। क्योंकि हमको सतगुरू की समझ नही है। जिसको सतगुरू की समझ आती है, उसकी आँखों से आंसु की धारा बहने लगती है। फिर वो और गुरू एक हो जाते हैं। जब शब्दानंद जी महाराज बलिया चले गए तो उनकी जबान पर एक ही नाम था गंजू बाबू। सुबह से शाम तक सिर्फ गंजू बाबू का ही नाम रटते रहते थे। फिर एक दिन हम सात–आठ आदमी उनके पास गए। उनको आँखों से कम दिखाई देता था। तो मैंने उनसे कहा महाराज जी मैं गंजू बाबू हूँ। आप मुझे रोज

याद करते थे, मैं आ गया हूँ, बोलो मेरे लिए क्या हुक्म है। उन्होने सिर्फ एक ही बात बताई, आप और मैं एक हैं। इसका मतलब हुआ जिसको गुरू की समझ आती है, फिर अंत में वो और गुरू एक ही हो जाते हैं। फिर दो नही रहते।

प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो ना समाई।

जो प्रेम की गली है उसमें दो नही जा सकते, गुरू अलग जाए चेला अलग जाए, नही जा सकते। गुरू और चेले को एक होना पड़ता है। तब जाकर उस गली को पार कर सकते हो। फिर वही प्रेम की बात आ गई। गुरू भी प्रेम है चेला भी प्रेम है। जब दोनों प्रेम हैं तो फिर वो अलग कैसे हो सकते हैं। क्या पानी–2 अलग हो सकता है। जब दो पानी मिल गए, फिर एक पानी ही बन जाता है। ना गुरू रहता है, ना चेला रहता है। परमदयाल जी महाराज हरेक सत्संग में बताते हैं गुरू और चेले में कोई अंतर नही है। बस एक ही अंतर है गुरू सुलझा हुआ है और चेला उलझा हुआ है। यानि गुरू के पास ज्ञान है और चेले के पास ज्ञान नही है। बस इतना ही अंतर है गुरू और चेले में। अब अगर गुरू ने अपना सारा ज्ञान चेले को दे दिया, फिा क्या अंतर रहा? अंतर खत्म। गुरू और चेला एक हो गया। चेला खुद प्रेम नही कर सकता, उसे पता ही नही प्रेम क्या होता है? आम संसारी आदमी को पता है, ये मेरा बेटा है, ये मेरी बेटी है, ये मेरी पत्नी है, बस यही प्रेम है। ये प्रेम नही होता है इसको बोलते हैं मोह। चेले को पता नही है प्रेम क्या होता है? लेकिन जब गुय चेले के अंदर ज्ञान डाल देता है। उसके अंदर जो प्रेम होता है वो जागृत हो जाता है। प्रेम हमारे सबके अंदर है। मालिक का रूप क्या है? मालिक का रूप है प्रेम। और मालिक प्रेम के रूप में हमारे अंदर है। जब गुरू ने ज्ञान दे दिया चेले को, चेले के अंदर जो प्रेम था, वो जागृत हो गया। और प्रेम ही मालिक का रूप है, फिर वो मालिक ही बन जाता है। गुरू तो मालिक का रूप है ही, फिर चेला भी मालिक का रूप बन जाता है। फिर दोनों एक हो जाते हैं। यही मतलब था जब शब्दानंद जी महाराज ने मुझसे कहा कि आप और मैं एक हैं।

राधास्वामी।